International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 4 Issue 2, February 2020 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

शिक्षा में संगीत

डॉ. अंजू रानी शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत गायन, राजकीय महाविद्यालय, सफीदों (जींद)

प्राक्कथन

संस्कृति राष्ट्र की पहचान होती है जिसमें राष्ट्र का प्रतिबिंब झलकता है। भारतीय संस्कृति योग और तप से निर्मित है तो भारत का प्रत्येक जन अपना जीवन ईश्वर से किसी न किसी रूप में जुड़कर देखता है। भारतीय संस्कृति में पल्लवित संगीत अपने में संगीत को विभिन्न रूपों को समेटे हुए है जिसके अन्तर्गत भारत का हर निवासी किसी न किसी रूप में संगीत से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार पाश्चात्य संगीत विलासिता और भोग से ग्रसित दिखाई पड़ता है जिसे सुनने पर मन नहीं अपितु पैर नाचता है। संगीत का यह रूप अकेलेपन से ग्रसित होता है। इसीलिए वहां के लोग स्वच्छंद और अकेला रहना पसंद करते हैं। जबकि भारतीय संगीत तीन सप्तकों मंद्र, मध्य और तार अर्थात ध्वनि के हर रूप से जुड़ा है। इसीलिए भारतवासी जीवन की हर परिस्थिति में अपने आपको ढालना जानते हैं और इसका श्रेय केवल और केवल संगीत को ही दिया जा सकता है जो जन्म के तुरन्त बाद मां की लोरी से आरम्भ होकर संगीत के अनेकों पड़ावों से गुजरता हुआ प्रवीणता और पारंगतता को प्राप्त होता है।वैदिक काल से ही संगीत अनेकों धर्म और आवश्यक अनुष्ठानों का अभिन्न अंग भी रहा है। सामवेद जैसा महान ग्रंथ संगीत पर ही आधारित है। अरस्तू उसी को संगीत कहते हैं जिसमे सत्य का अंश हो।

How to cite this paper: Dr. Anju Rani Sharma "Music in Education" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-4 | Issue-2, February 2020, pp.1190-1192, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd30219.pdf

IJTSRD30219

Copyright © 2019 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

संगीत की आवश्यकता:

संगीत समाज का एक अहम भाग है और हम समाज से जुड़े होते हैं तथा हमारे द्वारा क्रियान्वित क्रियाएं समाज और उसकी संस्कृति का रूप निश्चित करती हैं। जिस प्रकार भाषा का एकमात्र साहित्यिक अध्ययन ही उस भाषा का एकमात्र स्वरूप नही है उसी प्रकार संगीत के भी किसी एक प्रकार का अध्ययन उसका स्वरूप नही है संगीत के विविध आयाम हैं और उसके अनेक रूप हैं और उन रूपों के अनेकों प्रयोग। हमारे छोटे-छोटे प्रयास और सुझाव हमारे आस-पास के वातावरण को अति सूक्ष्म रूप में भी प्रभावित करते हैं। शिक्षा मानव जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करती है। इसीलिए इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर विद्यालयों और महाविद्यालयों में पुस्तकें और पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाई जाती है चूंकि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रति व्यक्ति से समाज एवं देश तथा विश्व का चहूंमुखी विकास संभव होता है इसलिए यह विकास मनोवैज्ञानिक व शारीरिक दोनों प्रकार से महत्वपूर्ण हो जाता है। मनोवैज्ञानिक व शारीरिक कारणों में सक्षम होने पर हम उसका आर्थिक रूप भी विचारते हैं अतः मनुष्य के चाहूंमुखी विकास में जो महत्वपूर्ण हो वही विषय संपूर्ण माना जाता है।

मनुष्य प्राकृतिक रूप से ध्वनियों से प्रभावित होता है और संगीत ध्वनि का सबसे उत्कृष्ट माध्यम है। हर बदलते परिवेश में संगीत में भी परिवर्तन होता रहा है और मनुष्य संगीत के उस बदलते रूप से प्रभावित भी हुआ है। समय की मांग ने संगीत की शालीनता को कम भी किया है परन्तु निर्माण के लिए हमे अपना समय और शक्ति शिकायत की तरफ ना करके समाधान की ओर लगानी चाहिए। संगीत में वर्तमान काल में मनुष्य ने विज्ञान की सहायता से हर विषय में विकास किया है परंतु यदि हम

मानव के स्वयं के सर्वांगीण विकास की बात करें तो वह विवेक तथा शांति की शक्ति की जो क्षमता है उस क्षमता को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाया है, यह तभी संभव है जब शिक्षा में कला को एक अति महत्वपूर्ण स्थान दिया जाए। वैदिक काल से ही मानव कृतित्व से संपन्न होने वाली प्रत्येक रचना को कला कहा गया है। सभी कलाएं रसोत्पत्ति में सक्षम न होने से केवल पांच कलाओं को सर्वश्रेष्ठ माना गया है और इन पांचो कलाओं में संगीत को सर्वश्रेष्ठ कला माना गया है संगीत में तीनों कलाएं गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश है यह तीनों कलाएं स्वतंत्र होते हुए भी एक दूसरे पर आश्रित है तथा एक दूसरे की पूरक भी है।

पाइथागोरस के अनुसार, "विश्व के कण-कण में संगीत व्यापक है।"

प्लेटो के अनुसार, "समस्त विज्ञानों का मूलाधार संगीत है।"

संगीत जैसी कला मानव के लिए भगवान का वरदान है इसके द्वारा मानसिक व शारीरिक दोनों प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है। जैसे नियम से नृत्य करने से शारीरिक गठन में सौंदर्य व शक्ति का संचार, वादन से दिमाग का विकास तथा गायन से आत्मा में परमात्मा का मिलन होता है। गायन से मनुष्य की सृजन शक्ति का विकास होता है तथा पद्य, गद्य और गायन में से मन पर गायन का विशेष प्रभाव पड़ता है। वैदिक काल से लेकर मध्यकाल हम कोई भी समय देखे तो संगीत कला के विषय में अनेकों अद्भुत उल्लेखों का हमें वर्णन मिलता है उन्हें उल्लेखों से प्रभावित होकर संगीत के विकास का सबसे अधिक श्रेय पंडित विष्णु दिगंबर प्लुस्कर व पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी को है जिन्होंने संगीत को अश्लीलता से मुक्त किया तथा संगीत के शास्त्र एवं क्रियात्मक पक्ष को पुष्ट किया। संगीत को आत्मसात करने के लिए आज हमारे पास अनेकों सुविधाएं हैं एवं अनेकों ऐसे कारण हैं जिससे इस महान तथा अत्यंत उपयोगी विषय का महत्व भी जाना जा सकता है कि क्यों यह विषय विद्यार्थी के लिए अति आवश्यक हो जाता है और केवल विद्यार्थी ही क्यों सम्पूर्ण मानव जाति के लिए संगीत शिक्षा अति महत्वपूर्ण है।

संगीत के द्वारा हम मानसिक रूप से समृद्ध होते हैं। संगीत के अभ्यास से हमारी चिंतन शक्ति का विकास होता है तथा चित्त को एकाग्र करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। मानसिक विकास के साथ-साथ संगीत हमारे शारीरिक विकास में भी सहायक है। नृत्य शारीरिक व्यायाम का सर्वोत्तम साधन है गायन से फेफड़ों को पर्याप्त शक्ति तथा वादन से दिमागी शक्ति बढ़ती हैं।

संगीत अभिव्यक्ति का अति सुंदर साधन है। संगीत के माध्यम से हम अपनी अभिव्यक्ति को और भी अधिक निखार सकते हैं। संगीत हमारे सर्वांगीण विकास में सबसे अधिक सहायक है। यदि हम मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ होंगे तो जीवन के प्रत्येक मूल्य की प्राप्ति का साधन प्राप्त करना हमारे लिए अधिक आसान हो जाएगा।

संगीत के द्वारा हमारी संस्कृति का भी विकास होता है। यदि हम संगीत कि किसी भी विधा की बात करें तो संपूर्ण विश्व में भारतीय संगीत को एक सम्माननीय दर्जा प्राप्त है।

संगीत समाज में प्रेम व मित्रता की भावना का निर्माण करता है। संगीत ही हमें हर्ष, शील, संयम तथा नम्रता का पाठ पढ़ाता है जिससे हम एक-दूसरे के प्रति मेल मिलाप की संभावना को दर्शाते हैं और एक सशक्त वह बेजोड़ समाज की रचना करते हैं।

संगीत के द्वारा ही भौगोलिक व राजनीतिक सीमाओं को पार करके संपूर्ण विश्व में एकता की भावना जगाई जा सकती है। एक देश का सांस्कृतिक समुदाय दूसरे देशों में संगीत एवं नृत्य के प्रदर्शन से आपसी सहयोग व प्रेम की भावना जगाता है जिससे आपसी भाई-चारे का माहौल पनपता है।

उपरोक्त सभी मत हमारे जीवन में संगीत की उपयोगिता को दर्शाते हैं। विषय के आरंभ में यदि हम देखें तो इस बात का महत्व दर्शाया गया है कि हमारे जीवन में जो उपयोगी है वह हमारी दिनचर्या में भी शामिल होना चाहिए और हमारी दिनचर्या का सबसे अधिक महत्व विद्यार्थी जीवन में है। विद्यार्थी जीवन में अर्जित की गई शिक्षा का महत्व स्थाई होता है। विद्यार्थी जीवन में यदि हम संगीत को विकास का स्थान दें तो कुछ प्रयास अति आवश्यक हो जाते हैं जैसे:- विद्यार्थियों को शास्त्रीय संगीत के सभी पक्षों का ज्ञान करना एवं उनमें संगीत के प्रति प्रेम का विकास करना जिससे कि उनके श्रवण ज्ञान का विकास हो और वे स्वयं के द्वारा संगीत प्रदर्शन करने में सक्षम हो सकें। विद्यार्थियों को लय वह ताल का ज्ञान करना तथा उन सभी यंत्रों की प्रकृति का ज्ञान करना जिससे संगीत को सफलता तथा संपूर्णता मिलती है। विद्यार्थियों को

समय की मांग की कसौटी पर खरा उतरने के लिए संगीत के मूल रूप को बिगाड़े बिना नए-नए प्रयोग का समावेश करके सीखना जिससे कि श्रोताओं को भली प्रकार से प्रभावित किया जा सके।

वर्तमान समय में संगीत विषय के विकास के लिए यह भी जरूरी है- कि संगीत विषय का चुनाव विद्यार्थी की रुचि एवं क्षमता के आधार पर हो भले ही वह किसी भी संकाय से संबंधित हो।

विद्यालयों में सांगीतिक शिक्षा के रूप में भाव संगीत तथा महाविद्यालयों में अलंकारों का अभ्यास स्वरों के साथ-साथ आकार में भी आवश्यक हो और एक ही थाट पर आधारित रागों का अभ्यास करवाया जाए। जिससे की हर थाट का रूप विद्यार्थी को भली-भांति समझा जाए।

ताल संगीत का प्राण है। ताल वह स्तम्भ है जिस पर गायन, वादन और नर्तन तीनों अवलंबित होते हैं। विद्यार्थियों को तबला-वादन का ज्ञान तबला की कक्षा में करना आवश्यक हो तथा हरमोनियम पर गायन का अभ्यास हो।"एक साधे सब साधे, सब साधे सब जाय" यही नीति अनुकरणीय हैऔर इसके तहत केवल एक राग के सुर पूर्ण रूप से गले में स्थित होने पर अन्य राग की ओर बढ़ना चाहिए। वैज्ञानिक उपकरणों की सही जानकारी जैसे रिकॉर्डिंग मिक्सिंग व माइक में बोले व गाने का अभ्यास अर्थात नए इलेक्ट्रॉनिक संगीत के लिए उपयोगी वाद्यों की जानकारी होना भी अति जरूरी है। पाश्चात्य संगीत के बढ़ते प्रभाव संगीत के अध्ययन क्षेत्र का विकास हुआ है। संगीत शास्त्र के ज्ञान को अधिक सुव्यवस्थित एवम वैज्ञानिक स्वरूप देने के उद्देश्य से ध्वनि विज्ञान, सौंदर्य शास्त्र ,कंठ संस्कार, मनोविज्ञान आदि का अध्ययन किया जाने लगा है।

इस प्रकार से वर्णित उपरोक्त साधनों से हम संगीत के मूल रूप के विकास एवं प्रचार को नवदृष्टि से चिंतन प्रक्रिया द्वारा गतिशील रख पाएंगे तथा शास्त्रीय संगीत को लेकर आमजन में जो भ्रांतियां हैं उनका निवारण संभव हो सकेगा।

आभार पुस्तक सूची:

[1] भरत का संगीत सिद्धान्त, कैलाश चंद्र देव वृहस्पति

[2] भारतीय संगीत में वाद्यों का वर्गीकरण, संगीत सौरभ भाग 1 पृष्ठ संख्या 92

[3] संगीत रत्नाकर, शारंगदेव, तालाध्याय

[4] प्रो. शुचिस्मिता शर्मा, शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिए परिवर्तन, पृष्ठ संख्या 4